ऋग्वेद ब्राह्मणों के आधार पर वैदिक संस्कृति

डॉ० सौभाग्यवती सिंह

Scanned with OKEN Scanner

श्रेष्ठ साहित्य पुस्तक-माला

श्रेष्ठ साहित्य पुस्तक-माला के अन्तर्गत उन सर्वमान्य साहित्यकारों की कृतियों का चयन एवं प्रकाशन किया जाता है, जिन्होंने अपने सृजनात्मक कृतित्व से अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को श्रेष्ठ साहित्यकारों की अग्रिम पंक्ति में स्वर्णाक्षरों में अंकित करा दिया है।

–सम्पादक

सम्पादक

डॉ० राजकुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : 2006

सहयोग राशि : 700 रुपये

प्रकाशन एवं मुद्रण-व्यवस्था
अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान के लिए
प्रचार मंत्री मधुकर मिश्र द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित।
दूरभाष : 0532–2504302

विषय–सूची

विषय — पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय : भूमिका — 19 से 64

परिचय–वैदिक वाङ्मय–मन्त्र और ब्राह्मण शब्दों का परिचय, मन्त्र, ब्राह्मण–ब्राह्मण ग्रन्थों का कार्य–वेदों की विविध शाखाएं तथा उनके उपलब्ध ब्राह्मण ग्रन्थ–ऋग्वेद की शाखाएं, शांखायन और कोषीतकि पृथक् ब्राह्मण–ऋग्वेद के उपलब्ध पृथक् ब्राह्मणों का परिचय, ऐतरेय ब्राह्मण, विषय-वस्तु विभाजन, शांखायन ब्राह्मण, दोनों ब्राह्मण ग्रन्थों में साम्य वैषम्य–ऋग्वेद ब्राह्मणों का रचना-काल-ऋग्वेद-ब्राह्मणों की भाषा एवं शैली, भाषा, शैली–भौगोलिक पृष्ठभूमि, क्षेत्रीय स्थिति एवं विस्तार, पांच भौगोलिक विभाग, मध्यदेश, पश्चिम भाग, उत्तर भाग, दक्षिण भाग, पूर्व भाग, समुद्र, नदियां, पर्वत, मरुस्थल, नगर-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, राजाओं के नाम, ऋषियों एवं पुरोहितों के नाम–प्राचीन संस्कृति पर आधारित शोधकार्य-ऋग्वेद-ब्राह्मणों से सम्बन्धित शोधकार्य-प्रस्तुत शोधकार्य की आवश्यकता।

द्वितीय अध्याय : समाज (1) : वर्ण व्यवस्था — 65 से 98

अर्थ-वर्णों की उत्पत्ति, ऋग्वेद के अनुसार, ऋग्वेदीय ब्राह्मणों के अनुसार–ब्राह्मण, शब्दव्युत्पति, ब्राह्मण

Scanned with OKEN Scanner

की शिक्षा-दीक्षा, समाजगत कर्म, अन्य विशेषतायें, आदायी, अवसायी, आदृत किन्तु अबल, यज्ञीय, पेय-सोमपान का एकाधिकारी, जात्यपकर्ष, क्षत्रियों से प्रतिस्पर्धा–क्षत्रिय, व्युत्पत्ति, कर्म, यज्ञीयपेय–सुरापान, सामाजिक अलगाव–वैश्य, व्युत्पति, कर्म, अन्य विशेषतायें, बलि (कर) प्रदान करने वाला, अन्य से उपभुक्त, इच्छानुसार वशीकृत, यज्ञीय पान, समाज में स्थिति–शूद्र, व्युत्पत्ति, दास, दासीपुत्र, समाज में स्थिति, यथेच्छा भेज दिये जाने वाला, सोने से उठा दिये जाने वाला, यज्ञीय पान तथा शूद्र कल्प, नरबलि, एक शूद्र कर्म–अन्य जनजातियां, दास, दस्यु, राक्षस, रक्षस्, असुर, पंचजन, निषाद, चतुवर्ण की संकल्पना का अन्य क्षेत्रों में प्रयोग, देवता, यज्ञ, मन्त्र एवं छन्द, वनस्पति, सोमसेवन, ऋत्विक, पशु, राष्ट्र, शरीर– ऋग्वेद ब्राह्मणकालीन वैदिक समाज की रूप-रेखा।

तृतीय अध्याय : समाज (2) परिवार 99 से 136

विषय-प्रवेश-परिवार-बोधक वैदिक प्रत्यय, गोत्र, प्रवर-परिवार व्यवस्था, रक्त-सम्बन्ध पर आधारित, दाम्पत्तिक–पारिवारिक सम्बन्ध, पुरुष सम्बन्ध, गृहपति, **पिता, पति, पुत्र, पौत्र, नप्तृ, श्वसुर, जामाता, देवर, स्याल, भ्राता, भ्रातृव्य, पितामह, अन्य** अनुपलब्ध सम्बन्ध-स्त्री-सम्बन्ध, गृहपत्नी, माता, पत्नी, पुत्री, बहिन, सास, वधू, जामि-निष्कर्ष।

चतुर्थ अध्याय : आर्थिक दशा 137 से 162

Scanned with OKEN Scanner

विषय-प्रवेश-आर्थिक दशा के प्रमुख आधार–कृषि, पशु, लम्बी यात्राओं में, स्थलीय यातायात में, रथों एवं युद्धों में, यज्ञों में बलि एवं दान, अन्य तथ्य चर्म प्रयोग, अन्य प्रयोग–उद्योग एवं शिल्प, वस्त्र-निर्माण की सामग्री, वेश, कसीदाकारी, खिलौने–रथ, शकट निर्माण कला–नौका निर्माण कला–धातु विज्ञान तथा शिल्प, स्वर्ण, रजत, अयस्, ताम्र तथा कांस्य, सीसा या त्रपु–चर्मकला रज्जुग्रन्थन एवं माला निर्माण–अन्य ललित कलायें–विनिमय–तौल–माप, तौल, माप।

पंचम अध्याय : राजनैतिक स्थिति 163 से 215

परिचय–राजत्व का प्रारम्भ, चुनाव द्वारा राजा बनाना, वंशानुगतता–राजपरिवार के सदस्य–राजत्व के स्वरूप एवं प्रकार, साम्राज्य, भौज्य, स्वाराज्य, वैराज्य, राज्य, पारमेष्ठ्य, माहाराज्य, आधिपत्य, समन्त पर्यायी सार्वभौम–शासनतंत्र, सभा और समिति, सभासद, सभा और समिति का प्रयोजन–शासन, तंत्र में पुरोहित का स्थान, सम्बन्ध, वंशानुगतता, राष्ट्र–रक्षक, प्रसन्न और शान्ततनु पुरोहित, पंचमेनि राजा को शपथ दिलाना, ब्रह्मपरिमर, पुरोहित का सेनापति रूप, पुरोहित की विद्वत्ता तथा योग्यता–बलि (कर) व्यवस्था–दण्डनीति युद्ध-व्यवस्था, सांनाहुक होना क्षत्रिय के लिए मेध्य, युद्ध के समय कर्मचारियों से विचार–विमर्श, युद्ध के समय सुरक्षा हेतु राजा के यहां परिवारों को रखना, राजा के लिए सुरक्षाबल, युद्ध में सेनापति, युद्ध के नियम, युद्ध में

Scanned with OKEN Scanner

व्यूह-रचना, युद्ध में विजय-प्राप्ति हेतु आभिचारिक कृत्य, नष्टराज्य की पुनः प्राप्ति, विविध प्रकार की विजय, युद्ध में पराजित होकर पीछे हटना-शस्त्रास्त्र, धनुष व बाण, वज्र, अंकुश, परशु, दण्ड, असि, शास-राजत्व-सम्बन्धी यज्ञ, राजसूय, ऐन्द्रमहाभिषेक, वाजपेय अश्वमेध।

षष्ठम अध्याय : संस्कृति (1) बाह्य पक्ष 216 से 271

भूमिका-भोजन, अन्न, अनाज से बने भोज्य पदार्थ, धाना और लाजा, पुरोडाश, चरू, परिवाप, अपुप, यवागू, दुग्ध एवं दुग्धनिर्मित पदार्थ, दुग्ध, दधि, घृत, सांनाय्य, आमिक्षा एवं वाजिनम् पयस्या-मधु-शक्कर-मांस- फल एवं वनस्पति-पेय-पदार्थ, सोम, सुरा। पात्र एवं उपकरण-महावीर एवं धर्म-स्थाली-चरू-कपाल पात्री और चमस-दर्वी-स्तुक-जुहू-ध्रुवा-स्फ्य-चमू और द्रोण कलश केंस, कंसपात्र, सुराकंस, ग्रह, पूतभृत, आधवनीय, उदंचन, वीवथ, उलूखल और मूसल, दृषद् और उपल, अद्रि, शूर्प, तितऊ, कारोतर, पवित्र और दशा पवित्र, अधिषवण फलक, अधिषवण चर्म, शफ, उपयमनी, आसन्दी, आसन, विष्टर, आस्तरण, उपबर्हण, व्याघ्रचर्म, कृष्णाजिन, अंकुश। वास्तुकला-पुर-महापुर-आवास, गृह, ओकस, पुरोण, दुर्या-मार्ग, महापथ, पन्था, स्रुति एवं ऊतिया-वेदियों का निर्माण। मनोरंजन के साधन-संगीत, नृत्य, गीत, वाद्य-खेल, रथदौड़ प्रतियोगिता, दौड़ प्रतिप्रतियोगिता-जुआ-सोमपान।

चिकित्सा-चिकित्सा और औषध-सम्बन्धी शब्द,

देवताओं के वैद्य, अश्विनी कुमार एवं अन्य वैद्य प्राकृतिक चिकित्सा, जल, अग्नि और सूर्य, विषाक्त एवं दूषित पदार्थ–गर्भस्थ जीवन से शिशु–जीवन तक का विकास, विविध रोग, शिक्षा–आश्रम व्यवस्था, शिक्षा की व्यवस्था–स्त्रीशिक्षा।

सप्तम अध्याय : संस्कृति (2) आध्यात्मक पक्ष 272 से 339

परिचय–यज्ञों का वर्गीकरण–अग्न्याधान–नित्यपक्ष, अग्निहोत्र–पार्विकयज्ञ, दर्श–पौर्णमास यज्ञ, दर्शपौर्णमास यज्ञ (प्रकृति स्वरूप), दर्श–पौर्णमास यज्ञ (नैमित्तिक) चातुर्मास्य (ऋतु–सम्बन्धी) यज्ञ, वैश्वदेव यज्ञ, व वरूणप्रधास, साकमेध, शुनासीरिय–काम्ययज्ञ, सोमयाग, अग्निष्टोम, उक्थ्य, षोड्शी अतिरात्र वाजपेय, आप्तोर्याम, अत्यग्निष्टोम–सत्र एवं अहीन, द्वादशाह गवामयन–राजकर्तृक यज्ञ–अन्य यज्ञ, पशुयज्ञ–याज्ञिक कर्मकाण्ड का सामान्य स्वरूप–विश्वोत्पत्ति तथा विश्वरूप–ज्योतिर्विज्ञान–पुनर्जन्म– मनस् तथा वाणी ऋग्वेदब्राह्मण गतदेवता–यम तथा पितर–ऋग्वेदब्राह्मणगत दार्शनिक विचारधारायें– पुनरावलोकन।

उपसंहार 340 से 346

सहायक ग्रन्थ–सूची 347 से 352

संक्षिप्त–संकेत–सूची 18

Scanned with OKEN Scanner

'सच्ची भारतमाता' के नाम से सुविख्यात विदुषी डॉ. सौभाग्यवती सिंह अनन्तश्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर श्री वासुदेवानन्द जी महाराज के कर-कमलों से समाजसेवी सम्मान ग्रहण करते हुये।

मंच पर आसीन टी. पति पूर्व कुलपति इ.वि.वि. वर्तमान कुलपति इ.वि.वि. डॉ. हरिराज सिंह व प्राचार्य डॉ. अवधेश अवस्थी कन्नौज, डॉ. राजकुमार शर्मा अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान, इलाहाबाद बोलते हुये श्री अवधेश अग्निहोत्री व दायीं तरफ सोफे पर विराजमान मोहनी सिन्हा, रूपरानी चन्देल, सौभाग्यवती सिंह, श्रीमती सुशीला चौहान

मंचासीन डॉ. अवधेश अवस्थी, टी. पति, पूर्व कुलपति इ. वि. वि., प्रो. हरिराज सिंह, वर्तमान कुलपति, इलाहाबाद वि. वि., डॉ. राजकुमार शर्मा अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान, इलाहाबाद, दायीं तरफ महिलाओं में श्रीमती मोहनी सिन्हा, रूपरानी चन्देल, सौभाग्यवती सिंह, सुशीला चौहान, डॉ. राजकुमारी शर्मा ''राज'', उमा सिंह।

मंचासीन विशिष्ट व्यक्तिओं में दायें से - प्रो. हरिराज सिंह, वर्तमान कुलपति, इ. वि. वि., उनके बगल में टोपी लगाये पूर्व कुलपति इ. वि. वि., टी. पति, डॉ. अवधेश अवस्थी, डॉ. राजकुमार शर्मा अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान, इलाहाबाद व चर्चा गोष्ठी में बोलते हुये डॉ. सौभाग्यवती सिंह व सामने लाल स्वेटर में पं. महेश नारायण शुक्ल पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति, उच्च न्यायालय इलाहाबाद व उनके बगल में बैठे हैं डॉ. ब्रजकुमार मित्तल।

मंच पर बैठे हैं प्रो0 हरिराज सिंह वर्तमान कुलपति, इ. वि. वि., टी. पति. पूर्व कुलपति, इ. वि. वि., डॉ. अवधेश अवस्थी, डॉ. राजकुमार शर्मा अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान, इलाहाबाद, दायीं तरफ विशिष्ट महिलाओं में पहले कृष्णा साही, मोहनी सिन्हा, रूपरानी चन्देल, डॉ. सौभाग्यवती सिंह, डॉ. राजकुमारी शर्मा 'राज'।

Scanned with OKEN Scanner